दिव्या शर्मा

निष्पक्ष

इ-मेल-sharmawriterdivya@gmail.com

"रामदरशवा, ओ देख— शुक्ला का घर भी ढह गया।" मनीष की तेज, दर्द में डूबी आवाज रामदरशवा के कानों में टकराई। उसकी नजर शुक्ला के दो-तल्ला मकान पर टिक गई। दो महीना पहले ही गृहप्रवेश करवाया था शुक्ला ने।

"जात और पैसे का बहुत घंमड था ससुर को। कईसा अकड़ दिखा रहा था। गई अकड़ पानी में। ले, बचा ले अपना मकान...।" रामदरशवा खुशी से चहका।

उसकी बात सुन मनीष ने गहरी साँस ली और बोला, "काहे खुश होता है रे! यह बाढ़ है। इसके क्रूर पंजों से न तेरा घर बचेगा न मेरा। बाढ़ न ऊँच-नीच जानती है न अमीर-गरीब।"

रंगरेज

"यह पीला रंग तुम पर बहुत खिलेगा।" किसी ने हौले से उससे कहा था।

वह मुस्कुराई और उसके तन-बदन पर पीत रंग चढ़ गया।

"तुम्हारे लिए अब लाल रंग जरूरी है।" एक दिन उसी ने कहा।

वह मुस्कुराई। जल्द ही सुर्ख लाली उसके चेहरे पर खिलने लगी।

"आओ, तुम्हें हरे रंग में रंग दूँ।" वह उसके कानों में फुसफुसाया और उसे अपनी बाँहों में भींच लिया।

वह फिर मुस्कुराई। लाज का दामन दूर जा गिरा। हरा रंग उसकी रग-रग में दौड़ने लगा। और देखते-ही-देखते उसके चारों तरफ किलकारियाँ गूँजने लगीं। वह भूल गई अपनी पसंद का हर रंग और डूबती गई उसके दिए हरेक रंग में।

लेकिन फिर एक दिन.... सबने कहा...

"तुम्हारे लिए सफेद रंग जरूरी है।"

वह इस रंग को अपने से दूर रखना चाहती थी, क्योंकि यह रंग उसने न दिया था...

...लेकिन सफेद रंग तन के साथ उसके मन पर भी पोत दिया गया। उसके दिए हुए सारे रंग छूट गए।

खनक

लाल और हरी चूड़ियाँ अपने-अपने रूप पर इतरा रही थीं। लाल चूड़ी इतराकर बोली, "अगर मैं हूँ तो दुल्हन का शृंगार है। माता के पूजन में मुझे ही चढाया जाता है।" और अदा से बज उठी।

यह सुनकर हरी चूड़ी बोली, "सावन में जब दुल्हन मायके आती हैं और चारों ओर हरियाली छाती है तब उनके हाथों में मैं ही खिलती हूँ। तब गोरी के हाथों पर चार चाँद लग जाते हैं।"

इतना कह दोनों खनक उठी। तभी उनकी नजर पास पड़ी टूटी चूड़ियों पर गई और वह दोनों हिकारत से बोली, "ये टूटी-फूटी चूड़ियाँ कहाँ से आ गईं? छि:, कितनी खराब दशा है इनकी।"

टूटी हुई चूडियाँ यह सुनकर दुखी हो गईं और उनकी आँखें सजल हो गईं। तभी पास रखा सिंदूर बोला, "इनकी कीमत तुमसे कई गुना है क्योंकि यह एक शहीद की पत्नी की चूड़ियाँ हैं, जो इसलिए टूट गईं ताकि तुम खिलखिलाती रहो।"